TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY

OU_182279

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.6/S 64 Sank Accession No. G.H. 2284

Author सिंह, अमर कुमार 'अमर'

Title संकलन । 1953

This book should be returned on or before the date last marked below.

संकेत

(कविता-संग्रह)

भूमिका लेखक

कविवर श्री रामदयाल पाण्डेय

लेखक

श्री अमर कुमार सिंह 'अमर'

प्रकाशक—
श्री जगदीश प्रसाद सिंह,
श्रीधर प्रकाशन मन्दिर
शत्रुघ्न पथ, बरैल,
पो० गढ़ बरुआरी, (सहर्षा)
बिहार

Checked 1965

प्रथम संस्करण १०००
मूल्य बारह आने

Checked 1969

प्राप्ति-स्थान—
व्यवस्थापक,
झाड़ प्रकाशन मन्दिर,
सहर्षा (बिहार)

मुद्रक—
बुद्ध प्रेस, बुद्ध मार्ग,
पटना—१

संकेत—

समर्पण

स्वर्गीय पूज्य श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिंह जी की पुण्य स्मृति में

—अमर

कवि

भूमिका

श्री अमर कुमार सिंह "अमर" का प्रथम कविता-संग्रह "संकेत" देखा। प्रसन्नता हुई। किशोर कवि का स्वागत और बधाइयाँ। उत्तरोत्तर विकास के लिए शुभकामनाएँ।

श्री "अमर" अभी किशोर हैं। उनकी कविता में भी "किशोरता" का होना स्वाभाविक है। परन्तु किशोरता तो एक अवस्था है, विकास-शील अवस्था है सीमित तो है बुढ़ापा, जिसमें विकास की सम्भावना नहीं। किशोर कवि श्री "अमर" की कविता-किशोरी को अभी विकसित होते जाना है, निरन्तर विकसित होते जाना है। अभी तो अपरिमित विकास की आशाएँ हैं।

स्वयं श्री "अमर" की रचनाएँ आशावादिनी हैं। उनमें आशा, विश्वास, मानव-सहानुभूति और नव रचना का स्वर है। इस रचनाशील क्रान्ति-युग के किशोर कवि का यही स्वाभाविक स्वर हो सकता है। प्रगतिशील विचारक कॉडवेल ने जिस मरणशील युग की चर्चा अपनी "स्टडीज इन ए डाइंग कल्चर" नामक पुस्तक में की है, वहीं आज का युग टिका नहीं है। युग उससे आगे बढ़ रहा है। जीर्ण-शीर्ण पुरातन को ध्वस्त करने के तकाजे अब पुराने पड़ गए हैं। अब तो नव रचना की कामनाओं के मंगल-स्वर फूट रहे हैं। राज-नीतिक जगत् में भी युद्धों का युग अब लद-सा गया है। सोवियत रूस की जनक्रान्ति की ध्वंसलीलाओं के समान नए चीन की जनक्रान्ति में ध्वंसलीलाओं की भीषणता न आने पाई। भीषणता की मात्रा कुछ

कम अवश्य रही। भारत के शान्तिपूर्ण स्वाधीनता संग्राम ने तो विश्व को एक नया संदेश ही दिया है। भारत स्वतन्त्र हुआ नहीं कि विनोबा ने भूमि वितरण और सम्पत्ति-वितरण का मंगलमय वातावरण प्रस्तुत कर दिया। ये सब शान्ति और नव रचना के आग्रह की झलक देने के लिए पर्याप्त हैं। कोरिया-युद्ध, दक्षिण अफ्रिका की मलानशाही आदि अपवाद स्वरूप ही हैं। मानवता की मंगल कामनाएँ जब बलवती होंगी, तब कितने ही चर्चिलों और आइसनहावरों की स्वर-कर्कशता कम हो जायगी, यह असन्दिग्ध है।

जिस किसी कवि के हृदय की भावुकता में जागरूकता होगी, वह विश्व राष्ट्र समाज और काल प्रवाह से अप्रभावित नहीं रह सकता। जाने या अजाने, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, स्पष्ट या अस्पष्ट, किसी न किसी रूप में वह प्रभावित होगा ही। अजाने भी उसकी रचनाओं में युग-मानवता की प्रवृत्तियों के स्वर मुखरित हो उठेंगे। इसके लिए कवि भले ही प्रयत्नशील न हो। श्री "अमर" की रचनाओं में भी युग-प्रभाव और युग निर्माण की यह स्वाभाविक झलक मिलती है।

आज के एक विख्यात अंग्रेज साहित्य-विचारक टी० एस० इलियट ने काव्य में राष्ट्रीय परम्परा के जिस प्रभाव को वांछनीय बताया है, उसका आभास भी श्री "अमर" की रचनाओं में मिलता है। इतना ही नहीं, भारत के अतीत गौरव के प्रति ममत्व की तीव्र भावना भी इन रचनाओं में मिलती है। भारतीय इतिहास के प्रति इस किशोर कवि में एक सहज किन्तु अत्यन्त उत्कट ममत्व-भावना है। किन्तु, एक वांछनीय विशेषता यह है कि कवि न तो अतीत के नाम पर रोता है न अतीत गौरव को फिर प्राप्त कर सन्तोष लाभ करना चाहता है। अतीत गौरव से वह नव रचना की प्रेरणाएँ प्राप्त

करता है। वह अतीत की नकल उतारना नहीं चाहता, बल्कि चाहता है नया निर्माण। अपने किशोरोचित स्वर में वह कहता है—

"रोओ अतीत मत मेरे,
तेरा स्वागत करता हूँ।"

और—

"जागो अतीत तुम मेरे,
मैं नूतन छन्द बनाता।"

हाँ, अब नए छन्दों की रचना हो रही है, होने वाली नहीं है; वह अब भविष्य की नहीं बल्कि वर्तमान की वस्तु है। कवियों की वाणी से इस नव रचना के प्रोत्साहन-स्वरों की आशा की जा सकती है। जो कवि इसमें अपनी काव्य साधना का जितना ही योग देगा, वह उतना ही अभिनन्दनीय होगा, उसकी देन उतनी ही महत्वपूर्ण होगी। युग तो वाल्मीकि, व्यास, तुलसी और कालीदास जैसी प्रतिभा की प्रतिक्षा में है जो नव रचना का विराट् दर्शन प्रस्तुत कर सके। परन्तु ऐसी प्रतिभाएँ तो अत्यन्त ही दुर्लभ और विरल होती हैं। युग की प्रेरणा के लिए कवीन्द्र रवीन्द्र ने अपनी सुविशाल प्रतिभा से युग निर्माण के विराट् दर्शन की कितनी ही रश्मिराजियाँ बिखेर दी हैं जिनसे मानवता शताब्दियों तक प्रेरित और प्रोत्साहित हो सकती है।

श्री "अमर" के किशोर स्वर ने इस दिशा में अपनी काव्यांजलि समर्पित करते हुए कहा है

"किन्तु, गगन के मुखमण्डल पर
नव इतिहास चमकता।

उठो वीर भारत के, तेरा
वेग नहीं रुक सकता।"

उसकी वाणी "नए ज्ञान का प्रकाश" और "स्वप्न में भी हताश न होने वाला" आशावाद ढूँढ़ने में व्यस्त प्रतीत होती है। वह कहता है—

"मैं नए ज्ञान का चिर-प्रकाश
होता न स्वप्न में भी हताश।"

और जैसे अपने ही शब्दों में उसने अपनी काव्य-प्रवृत्तियों का परिचय दिया है—

"किसलय के कोमल स्वर से
युग का सन्देश सुनाता
आया लेकर चिर गौरव,
नूतन इतिहास रचाता।"

श्री "अमर" का किशोर कवि जब युग का सन्देश सुनाता है तब उसमें भीषणता नहीं, बल्कि कोमलता होती है, किसलय की कोमलता।

दलितों, पीड़ितों और शोषितों के प्रति उसकी काव्यसाधना में जो सहानुभूति है उसमें कटुता नहीं है। इसे गांधीवादी दर्शन या गांधी युग का अप्रत्यक्ष प्रभाव भी कहा जा सकता है। शायद यह कवि अपनी वाणी से शोषकों और पीड़कों के हृदय को प्रभावित कर उनसे वांछनीय परिवर्तन कराना चाहता हो, जिसे दूसरे शब्द में

हृदय-परिवर्तन कहा जाता है। वह अभाव के कारण अकाल ही काल कवलित होनेवाले हतभागों की ओर इंगित करते हुए कहता है—

"जो रोते हैं कब्रों में
हम उनको शान्ति दिलाएँ।"

और आज शोषण-उत्पीड़न का जो नृशंस वातावरण व्याप्त है उसके सम्बन्ध में वह कहता है कि यह शोषण, उत्पीड़न और वैषम्य मानव संस्कृति के विपरीत है, असांस्कृतिक है, यद्यपि जिन्होंने शोषण-उत्पीड़न के द्वारा विशेष साधन-सुविधाएँ प्राप्त करली हैं उनकी शिक्षा-दीक्षा के कारण, साधारणतः सुसंस्कृत भी कहा या समझा जाता है। श्री "अमर" के शब्दों में—

"बनकर आज मदान्ध दीन
दीनों का गला दबाता।
छीन-छीन गैरों की रोटी,
अपनी भूख मिटाता।"

अभाव, वैषम्य और शोषण का ऐसा व्यापक कुप्रभाव है कि वर्ग के भीतर भी संघर्ष है, जिसे वर्ग संघर्ष न कहा जाय तो व्यक्ति-संघर्ष तो कह ही सकते हैं। दीन भी दीनों का गला दबाने को विवश हैं, वर्गद्रोह के संकेत हिन्दी कविता में विरल ही हैं।

शोषण-उत्पीड़न और वर्गद्रोह की असांस्कृतिकता की ओर इंगित करते हुए कवि कहता है—

"भूल गए हम संस्कृति अपनी,
किस्मत पर रोते हैं।

इस दारुण बन्धन में बँधकर,
सुध-बुध सब खोते हैं।"

शोषण-उत्पीड़न के विरुद्ध शान्तिपूर्ण क्रान्ति का वातावरण तैयार करनेवाले मसीहा के स्वागत में दीन-दुखियों और शोषितों-पीड़ितों की ओर से कवि कहता है--

"सूखी रोटी तुझे खिलाकर
हृदय शान्त कर लूँगा मैं।
अपना आँसू तुझे दिखाकर,
उर हल्का कर लूँगा मैं।"

ऐसे करुण चित्रों से यदि विद्रोह की भावनाएँ भी फूट निकले तो क्या आश्चर्य? विद्रोह करुणा जनित भी होता है, जो प्रगतिवादी काव्य का एक अंग कहा जा सकता है। किन्तु, श्री "अमर" की प्रवृत्ति शान्तिपूर्ण क्रान्ति की है। उनकी काव्य साधना में दलितों, शोषितों उत्पीड़ितों और दीन-दुखियों के प्रति जो अटूट सहानुभूति है, वह जिस किसी कोने मे फूट पड़ती है।

वर्तमान मानव-समाज से कवि को सन्तोष नहीं शान्ति नहीं। वह मानव-मानव के हृदय में मानुषिकता की शुभ्र ज्वाला जलती हुई देखना चाहता है, द्वेष-कपट और शोषण-उत्पीड़न की ज्वाला नहीं। मनुष्य के प्रति मनुष्य के व्यवहार में वह मानुषिकता को अजस्र-अखण्डित देखना चाहता है। वह कहता है

"मानव ममता की गोदी में
सोया आज कहाँ है?

उर में मानवता की जलती
ज्वाला शुभ्र कहाँ है ?"

और—

"मानव की छाती पर चढ़
दानवता बोल रही है।
द्वेष-कपट की तीव्र ज्वाल ले
घर - घर डोल रही है।"

परन्तु, वह इस प्रस्तुत दृश्य को चित्रित करने में ही व्यस्त नहीं है। वह मानुषिकता के आधार पर समाज की नव रचना की प्रेरणाएँ भी चित्रित करता जाता है। वह "युग-युग के सघनतम तिमिर" को "स्वर्ण किरण" बनते देख रहा है। वह कहता है—

"युग-युग का यह तिमिर सघनतम,
स्वर्ण किरण बन कर आया
सोई संस्कृति जाग उठी है,
दृग में सपना लहराया।"

अन्यत्र वह कहता है—

"मानव फिर सजो रहा आज नई कामना।
जीवन है क्षणिक, मगर शाश्वत यह भावना।"

इस मंगल-क्रान्ति, युग-परिवर्तन और नवीन मानवता के आभास एव आग्रह श्री "अमर" की रचनाओं में स्थान-स्थान पर मिलते हैं। यहीं उसका विशेष और प्रकृत स्वर है। काव्य के लिए ऐसी भावनाएँ सदा ही अपेक्षित रही हैं, अभिनन्दनीय रही हैं। विशाल

प्रतिभा का योग पाकर ऐसी काव्य-प्रवृत्तियाँ अमरत्व प्राप्त करती हैं। दीनों, दलितों, पीड़ितों न्यायवंचितों, अरक्षितों के प्रति जागरूक सहानुभूति ही काव्य की आत्मा है, प्रकृति है, आयु है। कवि आखिर किसकी तरफदारी करेगा, किसका साथ देगा, किसे वाणी प्रदान करेगा? उसे ही तो, जो पराधीन है, प्रताड़ित है, शोषित है, वंचित है, उपेक्षित है, पदमर्दित है! शोषक, पीड़क, वंचक अन्यायी, अत्याचारी की तरफदारी करना कवि-स्वभाव के प्रतिकूल है, कविता के प्रतिकूल है क्योंकि कविता में चरम मानुषिकता की चेतना ही, "सत्यं-शिवं-सुन्दरम्" की वेशभूषा में, मुखरित होती है। वाल्मीकि ने अपने हृदय की सहानुभूति किसे दी? वधिक को अथवा आहत क्रौंच को? अपहृता सीता को अथवा अपहर्त्ता रावण को? और व्यास ने अपनी सहानुभूति किसे प्रदान की? अन्यायी कौरवों को अथवा न्यायवंचित पाण्डवों को? कालिदास की सहानुभूति का पलड़ा किसकी ओर झुकता है? परित्यागकर्त्ता दुष्यन्त की ओर अथवा परित्यक्ता शकुन्तला की ओर? और रवीन्द्रनाथ ने तो स्पष्ट ही कह दिया है कि कविता मूकों पीड़ितों, उपेक्षितों को अपनाकर धन्य होती है।

कवि मानुषिकता, न्याय, सहानुभूति और सद्वृत्तियों का संरक्षक है, प्रहरी है, गायक है। जब जब इन जीवन-तत्त्वों पर संकट आते हैं, तब-तब कविता उस संकट के निवारण में संलग्न होती है।

फूटें, काव्यवाणी से ये मंगल-स्वर फूटें। आएँ, नए-नए कवि आकर इस मंगल-स्वर की साधना करें, जलती हुई आग में जिस ओर से भी, जहाँ से भी और जितना भी शीतल जल पड़ेगा, अच्छा ही

रहेगा। आएँ, कवि नवरचना का शान्तिपाठ करें कि अशान्ति और अन्याय का शमन हो।

अन्त में श्री 'अमर" का परिचय उनके ही शब्दों में देते हुए कामना है कि उनका यह परिचय उत्तरोत्तर विकसित हो और अन्य कवि भी अपना ऐसा ही परिचय, अपनी अपनी काव्य प्रतिभा के अनुसार दें। शायद यही कवि का और काव्य का परिचय भी है।

"मैं भविष्य का, वर्तमान का
नव इतिहास सुनाता।
आज क्रान्ति के लिए जगत् में
नई चेतना लाता !"

बस, "संकेत" को इसी दृष्टि से देखिए और कवि को अपनी सहानुभूति का योग दीजिए। किशोर कवि को प्रोत्साहन की भी अपेक्षा होती है। आशा है, हिन्दी-जगत् में "संकेत" का स्वागत होगा।

कदमकुआँ,
पटना।

रामदयाल पाण्डेय
१२-६-५३

परिचय

कोशी क्षेत्र में जो एक नई साहित्यिक चेतना उद्‌बुद्ध हो रही है, कवि अमर उसी के प्रतीक हैं। इनके स्वरों में उस क्षेत्र के साहित्य का अस्फुट मधुमास बोलता है। इन कविताओं में जो भावनाएँ प्रतिबिम्बित हैं, वे चाहे जैसी भी हो, लेकिन वे स्वच्छ और सरल हैं, इसमें सन्देह नहीं।

कवि श्री अमर कुमार सिंह 'अमर' सहर्षा जिलान्तर्गत बरैल निवासी श्री युत हलधर प्रसाद सिंह जी के अनुज श्री युत श्रीधर प्रसाद सिंह जी के सुपुत्र हैं। आपका परिवार सहर्षा जिले के विशिष्ट परिवारों में से एक है। आपके परिवार को लक्ष्मी और सरस्वती, दोनों की कृपा समान रूप से प्राप्त हुई है।

'संकेत' इनके प्रथम प्रयास का प्रतीक है, इस नाते इसमें कुछ खुरदुरापन भी है लेकिन इनका यह खुरदुरापन भी सुन्दर और स्वस्थ है। इनकी भावनाएँ बिल्कुल विशुद्ध हैं। ये अपने पाठकों के सामने अपने प्राकृत रूप में ही उपस्थित हुए हैं। और इस नाते पाठकों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे इन्हें अपने स्नेह और सहयोग से प्रोत्साहित करें।

श्री अमर में काव्य की स्वाभाविक प्रतिभा है, वे उस प्रतिभा को विकसित करने के लिये प्रयत्नशील भी हैं, ईश्वर ने इन्हें आगे बढ़ने की अन्य सुविधाएँ भी दी हैं; फिर कोई कारण नहीं कि हम इनके भविष्य के प्रति सशंकित हों।

हम इस नये किशोर कवि का स्वागत करते हैं।

कोशी कालेज
खगड़िया (मुंगेर)

—श्याम सुन्दर 'अशान्त'

विषय-सूची

क्रम-संख्या	विषय		पृष्ठ
१	रक्तदान	...	१७
२	सरिता	...	१६
३	हिन्द-गीत	...	२१
४	सत्य	...	२३
५	वसन्त-गीत	...	२५
६	मानव-गीत	...	२८
७	होली	...	३१
८	जागरण	...	३३
९	पुस्तक	...	३५
१०	क्रान्ति-गीत	...	३७
११	अनाथ	...	३९
१२	जीवन	...	४१
१३	विश्व-गान	...	४३
१४	परिचय	...	४५

१५	पतझड़-जीवन	...	४६
१६	स्वागत	...	४८
१७	प्रभात	...	५१
१८	दीप	...	५३
१६	परिचय	...	५५
२०	तममय जीवन	...	५६
२१	युग-गीत	.	५९
२२	दीपावली	...	६१
२३	समता की पुकार	...	६४
२४	जागरण-गान	...	६६
२५	नवजवानों से	...	६८
२६	साहित्य	...	७१
२७	भारत के लोगों से	...	७३
२८	वर्षा-गीत	...	७५
२९	पथिक से	...	७७

संकेत

रक्त-दान

माँ को जब सुत का काम पड़े
झट शीश लिये हम आयेंगे
अपने ही सिर को आप काट
जननी को भेंट चढ़ायेंगे

हम मातृभूमि के लिये मुदित
अपना शुचि रक्त बहायेंगे
मानवता के पग - चिन्हों पर
अपना बलिदान चढ़ायेंगे

अपने ही लोहू से हम सब
नूतन इतिहास रचायेंगे
दे रक्त-दान हम सब अपना
माता की लाज बचायेंगे

सरिता

सरिते, तू तो बहती जाती
अपने ही पथ के वेगों से
तेरे कूलों पर पथिक खड़ा
है पूछ रहा तेरी गति से

हे सरिते, अपने जीवन की
हालत कुछ मुझ को बतला दे
तेरे जीवन में मानव का
जो रूप छुपा वह दिखला दे

तेरे अन्तर में छुपा हुआ
है अखिल विश्व का शुभ निनाद
तेरी लहरों से धुल-धुल कर
मिटता जाता मन का विषाद

हिन्द-गीत

आज विश्व के दूर छोर पर
देख भाग्य की रेखा
स्वर्ण किरण से लिखा हुआ है
जहाँ शौर्य का लेखा

रोने लगा याद कर उनकी
मन में दर्द समाया
जन-जन को पाकर शोकाकुल
वर्त्तमान घबराया

किन्तु गगन के मुखमण्डल पर
नव इतिहास चमकता
उठो वीर भारत के तेरा
वेग नहीं रुक सकता

सत्य

मैं हूँ जीवन का नव चिराग
मानवता का हूँ अमल राग

मैं नये ज्ञान का चिर प्रकाश
होता न स्वप्न में भी हताश

जननी के कर का मृदुल कमल
भारत माता का मुख उज्ज्वल

ले सत्य-अहिंसा अगल-बगल
कर आलोकित यह दिग्मंडल

जूझते अहिंसा ले हम सब
कुछ रूप नया गढ़ते हम सब

वसन्त-गीत

आया वसंत बन परिमल
किंशुक पर, नव किसलय पर
आयी झंकृति बन कोयल
आमों की मंजरियों पर

किसलय के कोमल स्वर से
युग का सन्देश सुनाता
आया लेकर चिर गौरव
नूतन इतिहास रचाता

कलियों पर नई सुरभि है
कोयल नव गीत सुनाती
मृण्मय जीवन में सब को
स्वर्णिम सी राह दिखाती

छुप यहीं कहीं पर मेरा
दुखिया अतीत रोता है
अपने आँसू से अंतर
मन की पीड़ा धोता है

रोओ अतीत मत मेरे
तेरा स्वागत करता हूँ
तेरे आगे पूजा की
पावन थाली रखता हूँ

जागो अतीत तुम मेरे
मैं नूतन छन्द बनाता
करुणा के स्वर्णिम कण से
फिर 'अमर' सुकाव्य बनाता

मानव-गीत

मानवता की कब्रों से
आह्वान नया आता है
प्रेरित करता हम सबको
बलिदान गान गाता है

जो सुप्त युगों से उनको
कोई न जगाने आया
जो चिर पिपासु हैं उनको
किसने पीयूष पिलाया ?

इतने बलिदान दिये थे
तुमने जग के प्रांगण मे
उनका कुछ शेष नहीं अब
कब्रों के लघु आँगन में

जब गुजरे पथिक यहाँ से
जीवन सन्देश सुनाये
उनका बलिदान नयन में
बनकर सपना लहराये

जो रोते हैं कब्रों में
हम उनको शांति दिलायें
बनकर ममता का आँचल
उनके ऊपर छा जायें

होली

हम होली के पर्व मनायें
विरह-मिलन की आग छुपाये
आकर कौन यहाँ मुस्काये
इस छोटे से जीवन में फिर
कैसे कोई प्यार मनाये ?

मिलन-विरह के प्रांगण में फिर
कैसे हम सब गीत सुनायें
कैसे जीवन के इस मरु में
जीवन की जलधार बहायें
कैसे कोई प्यार मनाये ?

धाराओं मे बहता है मन
कैसे इसको पार लगाऊँ
घर-घर में जब गीत अनोखा
तो फिर मैं क्या गीत सुनाऊँ
कैसे कोई प्यार मनाये ?

जागरण

बढ़े चलो, बढ़े चलो
नवीन युग गढ़े चलो
बंधु प्यार भर रहा
राग यह सिहर रहा
खड़ा भविष्य है निकट
लिये सुक्रान्ति का शकट

फिर भविष्य सोच लो
बढ़े चलो, बढ़े चलो
ज्योति है जगो नवीन
है न आज मुख मलीन
बिजलियों को देख लो
बढ़े चलो, बढ़े चलो

भ्रान्ति में न तुम पड़ो
नवीन स्फूर्ति ले बढ़ो
चूम लक्ष्य के चरण
कर विकास का वरण
आज शान्ति में पलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो

पुस्तक

हम चलें खोजने वह पुस्तक
जिसमें हो नूतन गान भरा
जिसके सनेह से हो जाता
सभ्यता-वृक्ष यह हरा-भरा

फिर बहे जिन्दगी का प्रवाह
आलोकित कर यह शुभ्र राह

दलितों की खातिर अन्धकार
बन स्वर्ण किरण अब आयेगा
जीवन के पथ पर आकर के
नूतन सन्देश सुनायेगा

फूटेगी उर से करुण आह
आलोकित हो यह शुभ्र राह

क्रान्ति-गीत

मनुज आज तुम क्रान्ति करो !
जन-जन में हुँकार भरो !
आजादी के पथ पर बन कर
फूलों की मुस्कान झरो !

युग-युग का यह तिमिर सघनतम
स्वर्ण किरण बनकर आया
सोयी संस्कृति जाग उठी है
दृग में सपना लहराया

आज पुनः तुम क्रान्ति करो!
जन के हित भूदान करो!
आज विनोबा की वाणी से
नव जीवन निर्माण करो!

पर्ण कुटी के तृण-तृण से फिर
आती रह-रह करुण पुकार
भूमि दान दें हम सब जिससे
हो फिर जगती का उद्धार

अनाथ

उन्हें विश्व के कोने में है
चिता हेतु कुछ भूमि नहीं
आज निर्धनों के शव पर भी
मिलता कोई कफन नहीं

और पूछना क्या ? मिलता है
दाना नहीं एक कण भी
चलती रहती है निर्धन पर
शोषण की भीषण चक्की

आज गगन में मँड़राता है
दुर्दिन का बादल भीषण
ज्वालाओं से ढँका हुआ है
आज धरित्री का कण-कण

जीवन

१

मानव अपना जीवन देखो
तेरे जीवन की नींव कहाँ ?
पूछो अपने शुभ गौरव से
तेरा शुभ जन्म स्थान कहाँ ?

२

मेरी संस्कृति आधार बनी
सभ्यता हमारी डाली है
मेरे जीवन-धन पल्लव हैं
क्षण - क्षण वे देते ताली हैं

३

जब इन फूलों का भार पड़ा
होता कम्पन लघु जीवन में
दुर्दिन - बादल घिर आते हैं
काले जीवन के क्षण - क्षण में

विश्व-गान

आज विश्व का व्योम घिरा है
बंधु, प्रलय के घन से
मेरा गौरव शिथिल हुआ
जाता है इस बंधन से
देख रही है धरती रह-रह
आज गगन की ओर
पूछ रहा नभ के तारों से
जाऊँ अब किस ओर

पथ पर मौन पथिक है
लेकिन पैर बढ़ा जाता है
यह भी पूछ न सकता, तुझ से
मेरा क्या नाता है
बनकर आज मदान्ध
दीन · दीनों का गला दबाता
छीन - छीन रोटी गैरों की
अपनी भूख बुझाता
भूल गये हम संस्कृति अपनी
किस्मत पर रोते हैं
इस दारुण बंधन में बँधकर
सुध - बुध सब खोते हैं

परिचय

हम सभ्यता - संस्कृति के फूल
आत्म गरिमा को कभी न भूल।
हम सभ्यता - संस्कृति के फूल।

राह पर द्वेष - भाव का शूल।
हम सभ्यता - संस्कृति के फूल।

सभ्यता - संस्कृति मेरे कूल।
हम सभ्यता - संस्कृति के फूल।

पतझड़ जीवन

तममय जीवन उषा प्रलय का
खेल रहा रजनी आलय का
ऊषा के श्री - गृह में जीवन
मौन गीत सुनाता है भय का

नभ के तारे टिम - टिम करते
भू पर प्राणी मुक्त विचरते
दिग्दिगन्त में उषा विहँसती
जीवन के स्वर गूँजा करते

आज बना है जीवन पतझड़
प्रलयी आवेगों में पड़कर
पानी बिना तरसता है वह
जीता दुख का प्याला पीकर

स्वागत

क्या ले स्वागत साज सजाऊँ ?
एक देव तुम ही हो केवल
जो आया कुटिया की ओर
तममय आँगन में आया है
आज शान्ति का सुन्दर भोर

मेरे सोये आँगन में भी
आज जगा है नूतन ज्ञान
बोल उठे हैं सोये सपने
जाग उठा है हिन्द - महान

अरमानों के टूटे महलों
में भी आशाओं का स्वर
तुझे बैठने को दूँ अब क्या
या पसार दूँ यह चादर

मुझ में अब वह शक्ति नहीं जो
आऊँ लेकर के उपहार
मेरे पास बची निर्धनता
की सूखी रोटी का प्यार

पास न मेरे अब वे मधु-घट
जो पीयूष कराऊँ पान
उर का दुखिया नीर बहाकर
तुझे सुनाऊँ नूतन गान

सूखी रोटी तुझे खिलाकर
हृदय शांत कर लूँगा मैं
अपना आँसू तुझे दिखाकर
उर हल्का कर लूँगा मैं

प्रभात

बीती रजनी, आई यह
ऊषा जग के आँगन में
नव-विरह-मिलन हँसते हैं
पंथी बढ़ता क्षण-क्षण में

यह क्षितिज पुकार रहा है
पथ में विश्राम नहीं है
जीवन-पथ में रुक-रुक कर
चलने का नाम नहीं है

ठहरो, क्षण भर आकर के
दो क्षण आराम करो तुम
अब क्या भय है इस तम का
कष्टों से नहीं डरो तुम

क्षण में ऊषा के अंचल
से किरण नई निकलेगी
राही तेरे जीवन में
बनकर वह दीप जलेगी

दीप

दीप झाँकते महलों पर से
निर्जन पर्ण कुटी की ओर
पर्ण कुटी के तृण-तृण में भी
पाते हैं वे एक मरोड़

आज गरीबी के दारुण
बंधन में बंधकर मनुज-समाज
निज उर के संचित आँसू से
चुका रहे हैं अपना व्याज

अपने जीवन के सुख-दुख ले
दुखी भाग्य पर पछताता
अपने श्वासों की बाती दे
वह दीपक को उसकाता

दीपों के निर्दोष धुएँ भी
करते हैं चीत्कार विकल
देर सिर्फ है बुझने भर की,
आँखों में आँसू का जल

परिचय

मैं जग की ज्योति बढ़ाऊँगा
जीवन का दीप जलाऊँगा

दुश्मन से टक्कर लूँगा मैं
जीवन को नव गति दूँगा मैं

मैं प्रेम-सुधा बरसाऊँगा
धरती का उर सरसाऊँगा

यह झंडा मेरा फहराये
कुछ सपना नूतन ले आये

—:-:*:-:—

तममय जीवन

मानव ममता की गोदी में
सोया आज जहाँ है ?
उर में मानवता की जलती
ज्वाला शुभ्र कहाँ है ?

मानव की छाती पर चढ़
दानवता बोल रही है
द्वेष-कपट की तीव्र ज्वाला ले
घर - घर डोल रही है

जीवन सागर का खारा जल
पी जी सहलाना है
टूटी वीणा पर मानव ज्यों
गाता मधु गाना है

माया ममता की दुनियाँ में
जीवन भार बना है
घोर स्वार्थ के कारण ही
घर - घर में युद्ध ठना है

मानवता की पाँखों को
किसने यों कुतर दिया है
गौरव अतीत का जो था
वह सब अब उतर गया है

युग-गीत

बदल गया युग, नया जमाना
गाते हैं सब नया तराना
सभी चाहते ऊँचा बनना
अपने स्वाभिमान पर तनना

जीवन अब आजाद हुआ है
घर-घर फिर आबाद हुआ है
सभी मौन पथ पर बढ़ते हैं
एक नया सपना गढ़ते हैं
है नवीन दुनिया की रीत
गायें हम सब मिलकर गीत

दीपावली

कर रही है आज नया शृंगार नव दिशा
प्रेम-पथिक खोजता है प्रेम की दिशा

नयनों के नीर में
जीवन की पीर में

जाग उठा आज फिर नया-नया जागरण
और हटा जाता है तम का यह आवरण

जल रहा है चिराग
गाता भू अमल राग

दीप के प्रकाश से दीपित है आसमान
हुआ भाग्य मानव का आज पुनः ज्योतिमान

ले नूतन चेतना
मन में नव वेदना

मानव फिर सँजो रहा आज नई कामना
जीवन है क्षणिक मगर शाश्वत यह भावना

समता की पुकार

देख रहा हूँ वर्षों से
यह शोषण का अन्याय
क्या निर्धन के लिये जहाँ में
प्राप्य नहीं है न्याय ?

आज विवशता की कड़ियाँ हम
तोड़ेंगे हुंकारों पर
चलो बसाये एक नया जग
समता के आधारों पर

भूत बिताया बलिदानों में
वर्तमान बीता दुख में
अब भविष्य को मिल गढ़ना है
करो क्रान्ति नूतन पथ में

दीन-दुखी की दुख-समाधि पर
मैंने अँधियाली देखी
गद्दारों की सुख समाधि पर
मैंने उजियाली देखी

क्यों रोये निर्धन की नारी
पर्ण कुटी के अंदर ?
क्यों सोये धनियों की नारी
राजमहल के भीतर ?

मैं भविष्य का, वर्तमान का
नव इतिहास सुनाता
आज क्रान्ति के लिये जगत में
नई चेतना लाता

जागरण गान

बढ़ो हाथ में लेकर प्राण
भारत के मजदूर किसान

बम गोले बन्दूक गढ़ो
अपने पथ पर खूब बढ़ो

सुनो प्रकाश भरा यह गान
बढ़ो लिये यह तीर-कमान

पूरा कर माँ का अरमान
दो तुम सब अपना बलिदान

चूर करो दुश्मन का दंभ
झुके नहीं गौरव का स्तम्भ

नवजवानों से

१

भारत भाग्य विधाता के
जीवन में तम का डेरा
आज ज्योति मंडल के चारो
ओर अमा का घेरा

२

धूमिल पथ पर चलने वालो,
दूर करो इस तम को
एक लाल माँ के हैं हम सब
रोको अभी न हमको

हम जगती की भूख मिटाने
हैं खेतों में खटते
सुख-दुख सबकुछ सहते खुश हो
पथ से कभी न हटते

जो रोटी - रोटी चिल्लाते
उनकी भूख मिटा दो
प्रेम भरे सरिता का जल फिर
लाकर उन्हें पिला दो

आज दर्द, दुख, पीड़ाओं से
भरा जगत का आँगन
निष्ठुर रीति नीति जगती का
देख विकल जन का मन

चलो बंधुओं आज प्यार का
नूतन दीप जला दो
भाई-भाई को सनेह से
बाँधो, नई कला दो

साहित्य

साहित्य-यह जीवन का
चिर अजेय बल है
यह मानव के पथ का
नूतन सम्बल है

यह तममय जीवन को
ज्योतित कर देता
चमक दिखाकर अपनी
तम को हर लेता

उर की यह ज्वलित ज्वाल
बुझे नहीं बुझती
एक नया सपना ले
यह मन में सजती

भारत के लोगों से

वही पवन है, वही चन्द्र है
वही अरुण है, वही खगोल
लेकिन आज कहाँ वह गौरव—
बाकी, हम लोगों का बोल ?

संस्कृति को कोई न देखता
है वह नीचे पड़ी हुई
दुनिया में दुर्दिन छाया है
आज कठिन हर घड़ी हुई

भूल सभ्यता-संस्कृति मानव
मद की ओर बढ़ा जाता
अपनी गरिमा को खोकर वह
अपनी गति पर पछताता

*

वर्षा-गीत

रिमझिम-रिमझिम-रिमझिम कर
आशा की बूँदें झरती
जीवन का रस बरसा कर
धरती की पीड़ा हरती

लेकर सागर से पानी
यों सींच सबों के प्राण
फिर मिलकर सागर-जल में
पूरा करती अभियान

बादल लघु बूँदों में भर
पुलकित कर देते जग को
शीतल बन जाता कण-कण
धो देते जीवन मग को

पथिक से

चलो पथिक अमृत - घट ले
दलितों की प्यास बुझाने
माँ पर शीश चढ़ाकर अपने
को आजाद कराने

आज तिमिर-पथ पर बढ़ना है
सत्य - अहिंसा ले कर
युग के बुझे हुए गौरव को
आज गुँजा दो घर - घर

खंडहर की सोई आत्माओं
को हम आज जगायें
चले प्यार का सम्बल लेकर
जग का तिमिर भगायें

अब, पीयूष भरी वाणी
धरती पर गूँज रही है
बंधु, प्रेम की वह सुखदायक
सरिता दूर नहीं है ।

समाप्त